

डॉ. डेविड टर्नर, मैथ्यू सत्र 1ए - मैथ्यू I का परिचय: उत्पत्ति, कैनोनिकिटी, संरचना

पाठ्यक्रम में आपका स्वागत है। यह डेविड टर्नर है, और यह व्याख्यान 1A है। इस सुसमाचार पर टेप सेट का पहला व्याख्यान। जब आप सभी टेप पर काम करते हैं, तो आप पूरक सामग्री के रूप में अपने साथ रखना चाहते हैं, जो आपको सेमिनरी से मिलनी चाहिए थी। व्याख्यानों में पूरक सामग्री और रूपरेखा होती है, जो बताती है कि वह उनमें से अधिकांश में क्यों जा रहा था। उनके पास कुछ पूरक सामग्री है, जो आपको अनुसरण करने में मदद करेगी और उम्मीद है कि आप इस अद्भुत पुस्तक का अपना अध्ययन करने में सक्षम होंगे।

तो, यह व्याख्यान 1 ए है जिसमें हम कुछ परिचयात्मक विषयों पर चर्चा कर रहे हैं। यह सबसे रोमांचक विषय नहीं है, लेकिन यह मैथ्यू के सुसमाचार की सेटिंग को समझने में अभी भी सहायक है। तो कृपया पृष्ठ 3 पर जाएँ। यदि आप चाहें तो उस शीट पर नोट्स लें।

मैथ्यू के सुसमाचार की उत्पत्ति। मैथ्यू के सुसमाचार की उत्पत्ति मैथ्यू के गुमनाम के रूप में आसानी से पता नहीं लगाई जा सकती है? अन्य तीन सुसमाचारों की तरह, कोई भी लेखक, प्राप्तकर्ताओं और इस सुसमाचार की सेटिंग के बारे में केवल शिक्षित अनुमान लगा सकता है। इस तरह के अनुमान पुस्तकों, व्याकरण, वाक्यविन्यास, साहित्यिक शैली को ध्यान में रखकर और पंक्तियों के बीच पढ़कर उनके विशिष्ट विषयों का अध्ययन करके बनाई गई परिकल्पना नहीं हैं। इसलिए, पैट्रिस्टिक परंपराओं को ध्यान में रखते हुए, यानी शुरुआती चर्च के पिताओं की परंपराएं और अध्ययन के ऐसे रास्ते।

इन परंपराओं ने सर्वसम्मति से पुष्टि की कि मैथ्यू का सुसमाचार पहला सुसमाचार था, जो इस संबंध में आधुनिकता की सोच के विपरीत है। मैथ्यू का सुसमाचार प्रेरित मैथ्यू द्वारा लिखा गया था

खैर, आइए एक पल के लिए लेखक के बारे में सोचें। हालाँकि मैथ्यू का सुसमाचार गुमनाम है; यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि यह वास्तव में मैथ्यू द एपोस्टल के एक लेखक द्वारा आम युग की दूसरी शताब्दी की पहली तिमाही में लिखा गया था। जब मैं शब्द का उपयोग करता हूँ, तो निकट था। मैं इसका उपयोग उसी तरह करता हूँ जैसा कि अधिकांश लोग कहते हैं, जब वे विज्ञापन या ओडोमीटर कहते हैं, तो हमारे प्रभु का वह वर्ष, आप पर है, इसका अर्थ है कि वे समय हैं, जो यीशु के साथ शुरू हुआ जब यहूदी और ईसाई आम युग में रहते थे।

इसलिए, मैथ्यू के सुसमाचार को मैथ्यू प्रेरित के नाम से जाना जाता है, जो आम युग की दूसरी शताब्दी की पहली तिमाही में इसका लेखक था। और उल्लेखनीय प्राचीन पांडुलिपियों में ऐसे शीर्षक हैं जो प्रेरित के नाम से जाने जाते हैं। मैथ्यू पैट्रिस्टिक, परंपराएँ इस विवरण से सहमत हैं जैसे कि युसेबियस, एक्लेसियास्टिकल हिस्ट्री, और 3.39 में दूसरी शताब्दी की शुरुआत से पापियास का हवाला दिया गया है, अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट का हवाला युसेबियस ने दिया है। 614 क्लेमेंट तीसरी शताब्दी की शुरुआत से था। युसेबियस और उनके एक्लेसियास्टिकल हिस्ट्री 6.25.4 द्वारा उद्धृत ओरिजन, तीसरी शताब्दी के मध्य से ओरिजन की ओर इशारा करता है। ये सभी व्यक्ति, पापियास, अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट और ओरिजन, पुष्टि करते हैं कि प्रेरित मैथ्यू ही प्रथम सुसमाचार के लेखक हैं।

आम युग की दूसरी शताब्दी के उत्तरार्ध से, इरेनियस के शब्द, युसेबियस से सहमत हैं। यह अतिरिक्त चौथी शताब्दी की गवाही है। यह प्रभाव उसी समय यरूशलेम में पाया जा सकता है। हाँ, और जेरोम इस उल्लेखनीय तथ्य से कि यह पितृसत्तात्मक परंपरा यह मानती है कि मैथ्यू मूल रूप से हिब्रू में लिखा गया था, बाद में विहितता और पाठ्य इतिहास पर नोट के तहत चर्चा की जाएगी।

पैट्रिस्टिक गवाही को अलग रखते हुए, अधिकांश विद्वान मैथ्यू के यहूदी अभिविन्यास से यह निष्कर्ष निकालते हैं कि इसका लेखक एक यहूदी ईसाई था, शायद एक ईसाई यहूदी एक अधिक ऐतिहासिक रूप से सटीक शब्द है। लेकिन एक अल्पसंख्यक दृष्टिकोण है, जो दावा करता है कि मैथ्यू के यहूदी दिखावे यहूदी धर्म के खिलाफ एक गैर-यहूदी लेखक के वाद-विवाद का साहित्यिक निर्माण है। मुझे लगता है कि यह एक गलत दृष्टिकोण है, लेकिन ऐसे लोग हैं जो इसे मानते हैं।

अब, यह पुस्तक की तिथि है। यह बहुत संभव है कि चर्च में मैथ्यू के बारे में संकेत हों। फादर इग्नैटियस, जो आम युग की पहली शताब्दी के अंत और दूसरी शताब्दी के आरंभ में रहते थे। डिडेचे नामक एक दस्तावेज में भी, जो आम युग की दूसरी शताब्दी के आरंभ से एक पैट्रिस्टिक दस्तावेज है। पापियास की गवाही के साथ संयोजन में लिए गए ये शुरुआती भ्रम, जिसका हमने उल्लेख किया है। यह स्पष्ट करें कि मैथ्यू तदनुसार दूसरी शताब्दी के आरंभ में अच्छी तरह से जाना जाता था। टर्न ने पहली शताब्दी के सुसमाचार को सबसे बाद में लिखा होगा। सुसमाचार संबंधों के मार्कन और प्राथमिकता दृष्टिकोण के आधार पर वर्तमान आम सहमति, मैथ्यू की उत्पत्ति को आम युग के 80 या 90 के दशक में रखती है। कुछ मामलों में, यह वर्ष इस विचार को स्वीकार करने वाला है कि मैथ्यू 24-25 यरूशलेम के विनाश के बारे में घटना के बाद एक भविष्यवाणी का गठन करता है।

यरूशलेम के विनाश के बाद लिखा गया, क्षमा करें, सामान्य युग 70, यह यीशु के होठों पर रखी गई एक गलती है। लेकिन ऐसे लोग हैं जो तर्क देते हैं कि यरूशलेम के विनाश के बाद जमनिया से निकलने वाले विकासशील चर्च की स्थिति,

दूसरी ओर, यदि कोई व्यक्ति तिथि के अपोस्टोलिक लेखकत्व के लिए पैट्रिस्टिक गवाही को स्वीकार करता है, तो संभवतः इसे पहले कहा जाना चाहिए, अर्थात्, केवल तभी जब कोई मैथ्यू 24-25 को यीशु से एक प्रामाणिक परंपरा के रूप में लेता है, न कि घटना के बाद की भविष्यवाणी के रूप में, तो सुसमाचार को 70 के बाद की तिथि देने की कोई आवश्यकता नहीं है। इसलिए, यदि कोई आश्वस्त नहीं है कि मैथ्यू मार्क पर निर्भर है, और मैं नहीं हूँ। प्रारंभिक तिथि का एक और कारण है। ऐसे उल्लेखनीय विद्वान हैं जो मैथ्यू को 70 ईस्वी से पहले का मानते हैं, और इनमें क्रेग ब्लोमबर्ग जैसे विद्वान शामिल होंगे। डॉन कार्सन, रॉबर्ट गुंड्री, गेरहार्ड मेयर, ब्यू राइका और जेएटी रॉबिन्सन, लेकिन कुल मिलाकर, विद्वान पुस्तक की तिथि के बारे में हठधर्मी नहीं हैं।

अब प्राप्तकर्ता और मैथ्यू का अवसर। मैथ्यू की विशेषताएँ। पूर्ति सूत्र हिब्रू बाइबिल से उद्धरण, और यीशु की उनकी प्रस्तुति जो नष्ट करने के लिए आया था, लेकिन कानून और भविष्यवक्ताओं को पूरा करने के लिए, दो कारण हैं कि मैथ्यू के प्रत्येक छात्र को इन सुसमाचारों के संबंध के बारे में कुछ निष्कर्ष पर आना चाहिए यहूदी धर्म के प्राप्तकर्ता विद्वान इस मुद्दे पर विभाजित हैं, कुछ लोगों का मानना है कि मैथ्यू का समुदाय। इसमें कई गैर-यहूदी शामिल हैं और यह पहले से ही आराधनालय से अलग है, गुंड्री और स्टैटन इस निष्कर्ष पर आते हैं। अन्य लोग विपरीत दृष्टिकोण रखते हैं कि मैथ्यू का समुदाय काफी हद तक यहूदी है और अभी भी आराधनालय से जुड़ा हुआ है, हैरिंगटन, ओवरमैन, साल्वेरनी, सीगल और सिम जैसे लोग।

और ऐसे लोग भी हैं जो इन दोनों के बीच एक तरह का मध्य मार्ग अपनाते हैं। विरोधियों का तर्क है कि मैथ्यू को संतोषजनक ढंग से तभी समझाया जा सकता है जब इसे एक संघर्षरत अल्पसंख्यक की पृष्ठभूमि में देखा जाए, यानी मैथ्यू के लोग, जो आराधनालय छोड़ने की प्रक्रिया में हैं, यानी वे लोग जिन पर यीशु हमला कर रहे हैं। हैगनर उनमें से एक हैं जो इस दृष्टिकोण को अपनाते हैं।

इस पाठ्यक्रम में, यह दृष्टिकोण अपनाया गया है कि मैथ्यू का समुदाय अभी भी आराधनालय से जुड़ा हुआ है। ओवरमैन साल्वेरनी और सिम जैसे विद्वानों ने इस आशय के बारे में मेरे विचार को निर्णायक रूप से समझने के लिए तर्क दिया है, और टिप्पणी शायद इसे सबसे स्पष्ट रूप से और लगातार लेती है, जो कि डब्ल्यूडी डेविस और डेल एलिसन द्वारा अंतर्राष्ट्रीय आलोचनात्मक टिप्पणी श्रृंखला में तीन-खंडों का विशाल कार्य है। यह पुस्तक उन सभी के लिए अपरिहार्य है जो वास्तव में मैथ्यू का गहराई से अध्ययन करना चाहते हैं।

जबकि कई श्रृंखलाएँ प्रस्तावित की गई हैं, मैथ्यू के समुदाय का स्थान संभवतः निश्चित रूप से कभी भी ज्ञात नहीं होगा। एंटीओक शहर के कई समर्थक हैं, लेकिन अन्य लोग टायर या सिडोन, किलपैट्रिक, गैलील, ओवरमैन या ट्रांसजॉर्डन में पेला का सुझाव देते हैं, स्लिंगरलैंड

नामक व्यक्ति उस निष्कर्ष पर पहुंचा। यह एक सुखद तथ्य है कि इस पुस्तक के संदेश को समझना इसके मूल प्राप्तकर्ताओं के स्थान को जानने पर निर्भर नहीं करता है।

सुसमाचार के लेखन का अवसर और उसका उद्देश्य, बेशक, इसमें कहीं भी स्पष्ट रूप से नहीं बताया गया है, और इसे केवल मैथ्यू से प्राप्त परिकल्पनाओं के आधार पर ही अनुमानित किया जा सकता है। यह मानते हुए कि श्रोता एक ईसाई-यहूदी समुदाय है, जैसा कि मैं हूँ, यह स्पष्ट रूप से एक ऐसा समुदाय है जिसे यह समझने की आवश्यकता है कि यीशु, मसीहा के जीवन ने हिब्रू बाइबिल को कैसे पूरा किया।

और यीशु की शिक्षा ने मूसा के टोरा की व्याख्या कैसे की, 5:17, और पतन। इस समुदाय को यह भी जानना ज़रूरी था कि क्यों गैर-ईसाई यहूदी नेताओं का अब और अनुसरण नहीं किया जाना चाहिए, अध्याय 23।

समुदाय को स्पष्ट रूप से गैर-यहूदी मिशन शब्द के लिए अपने क्षितिज का विस्तार करने की आवश्यकता थी। मैथ्यू नियमित रूप से गैर-यहूदियों को सकारात्मक प्रकाश में चित्रित करता है, जैसा कि जब यीशु की वंशावली में गैर-यहूदी महिलाओं का उल्लेख किया जाता है, 1:3, 5 और 6, और गैर-यहूदियों के चेहरे पर जोर दिया जाता है, 8:10, 15:28 और 27:54।

कथा से इस तरह के विवरण पाठक को उस चरमोत्कर्ष के लिए तैयार करते हैं कि समुदाय यीशु के संदेश को सभी राष्ट्रों तक ले जाए 28:19. निम्नलिखित चर्चा, मैथ्यूज धर्मशास्त्रीय जोर, सुसमाचार के मूल उद्देश्य के बारे में अतिरिक्त निहितार्थ प्रदान करता है।

अब हम यहाँ व्याख्यान 1A में विहितता और इतिहास के मामले पर आगे बढ़ते हैं , जो हमारा दूसरा मुख्य मुद्दा है,

सबसे पहले, हमें पापियास की गवाही पर विचार करने की आवश्यकता है। मैथ्यू के पाठ्य इतिहास में आधारभूत प्रश्न यह है कि क्या यह संभव है। ओरिजन एक सेमिटिक पाठ है जिसका बाद में हमारे वर्तमान ग्रीक, मैथ्यू पैट्रिस्टिक स्रोतों में अनुवाद किया गया था, जो इस स्थिति को लेते हैं। मुझे लेखकत्व की पिछली चर्चा में देखा गया है। सबसे पुराना पाठ यूसेबियस, एक्लेसियास्टिकल हिस्ट्री 3.39.16 है, जो पापियास को इस आशय से उद्धृत करता है कि मैथ्यू ने एकत्र किया। हिब्रू भाषा में यीशु के बारे में भविष्यवाणियाँ। और प्रत्येक ने उन्हें यथासंभव सर्वोत्तम रूप से व्याख्यायित किया।

पहली नज़र में पापियास। क्षमा करें, पहली नज़र में, यूसीबियस, पापियास का हवाला देते हुए ऐसा लगता है कि मैथ्यू मूल रूप से हिब्रू में रचा गया था और बाद में लोगों ने, शायद उस हिब्रू मूल से अनुवादित होकर, इसे हमारे ग्रीक सुसमाचार में अनुवादित किया। चूँकि हमारा वर्तमान, ग्रीक मैथ्यू हिब्रू मूल के अनुवाद की तरह नहीं लगता है। कुछ लोग तर्क देते हैं कि मैथ्यू ने सुसमाचार और ग्रीक सुसमाचार दोनों लिखे। अन्य लोग सोचते हैं कि पापियास यीशु

की भविष्यवाणियाँ या कथन हैं जिन्हें आधुनिक स्रोत आलोचक आपको कहते हैं, या यहाँ तक कि यीशु के प्रवचन जो हमारे ग्रीक मैथ्यू में पाए जाते हैं

लेकिन ऐसा लगता है कि कोई पांडुलिपि स्विक उदाहरण नहीं है। यह कुछ तथाकथित हिब्रू कहता है। मैथ्यू का उल्लेख पापियास द्वारा इन और अन्य कारणों से किया गया है, जैसे कि गुंझी।

प्रस्तावित किया कि मेरी हिब्रू बोली में शब्द का अर्थ वास्तव में हिब्रू भाषा नहीं है, लेकिन मैंने लेखन की एक शैली या एक अलंकारिक शैली प्रस्तुत की, और जब यह पवित्र होता है, तो हर कोई व्याख्या करता है कि इसका अर्थ अनुवाद नहीं है। लेकिन हर किसी ने उनकी व्याख्या अपने हिसाब से की। अगर ऐसा है, तो पापियास कहते हैं कि मैथ्यू की रचना की शैली यहूदी थी, और बाद के व्यक्तियों ने अपनी क्षमता के अनुसार लेखन की इस यहूदी शैली की व्याख्या की।

संभवतः मैथ्यूज की वंशावली और रूप पर जोर जैसी विशेषताएं उनकी यहूदी रचना शैली की सूचक हैं।

जहाँ तक यूनानी पांडुलिपियों का प्रश्न है, मैथ्यू का पाठ्य इतिहास उनमें से बड़ी संख्या में उदाहरण के रूप में मिलता है, वहाँ 20 से अधिक अन्सियल पांडुलिपियाँ हैं, जिनमें मैथ्यू का पूरा या लगभग पूरा पाठ है, उनमें से सिनाईटिकस और वेटिकनस (अलेफे और बी द्वारा संक्षिप्त) भी शामिल हैं, कोडेक्स, सी, डी और डब्ल्यू, कोडेक्स सिग्मा के अतिरिक्त 0211, एल, के, एम, यूवी, डेल्टा बीटा, पाई और ओमेगा हैं।

ये तो बस कुछ ही हैं, और अन्य पांडुलिपियाँ भी हैं जिनमें मैथ्यू के अंश हैं, जिनमें पी 64 और पी 67, पी 77, पी 1, पी 45, पी 53 और पी 70 शामिल हैं और यह आगे भी जारी है, ये पांडुलिपियाँ अन्सियल पांडुलिपियों से कुछ पहले की हैं, हालाँकि ये सिर्फ एक उल्लेख है। ये पपीरस और बिना सील वाली पांडुलिपियों के अलावा और भी खंडित हैं। इसलिए सैकड़ों छोटे-छोटे बदलाव हैं जो तकनीक की गवाही देते हैं। मैथ्यू को, बेशक, पैट्रिस्टिक स्रोतों में बहुतायत से उद्धृत किया गया है और अक्सर चर्च के लेक्शनरी में उपयोग किया जाता है, और इसे शुरुआती दिनों में ईसाइयों द्वारा अन्य शुरुआती संस्करणों में अनुवादित किया गया है। इसलिए मैथ्यू के पाठ्य इतिहास में बहुत सारी पांडुलिपियाँ उपलब्ध हैं।

जहाँ तक मैथ्यू की प्रामाणिकता की बात है, यह आरंभिक चर्च का सबसे लोकप्रिय सुसमाचार था। और रूढ़िवादी लोगों के बीच इसकी प्रामाणिकता के बारे में कोई संदेह नहीं था, और वह चर्च के पूर्वी या पश्चिमी क्षेत्रों में है। हालाँकि, दूसरी शताब्दी के मध्य में विधर्मी, मार्सियन ने अपने अनुयायियों के साथ मिलकर एक कैनन को अपनाया, जिसमें मैथ्यू शामिल नहीं था, पुराने नियम, मार्क, जॉन और सामान्य पत्रियों का तो जिक्र ही नहीं। मार्सियन ने पुराने नियम

और नए नियम के बीच दो अलग-अलग देवताओं के रहस्योद्घाटन के रूप में एक तरह के गूढ़ द्वैतवाद की पुष्टि की। इसलिए मैथ्यू का यीशु द्वारा पुराने नियम की पूर्ति पर जोर देना मैकियन के लिए अकल्पनीय था।

मार्सियन ने ल्यूक के सुसमाचार और पॉलिन एपिस्टल्स के केवल संपादित संस्करण को अपने कैनन के रूप में स्वीकार किया। जाहिर है, प्रारंभिक रूढ़िवादी कैनन पर उनका हमला इस प्रक्रिया में एक प्रमुख कारक था जिसने आने वाले दिनों में कैनन को औपचारिक रूप दिया। पहले से ही उद्धृत पैट्रिस्टिक स्रोतों के अलावा। ल्यूक और जॉन के तथाकथित एंटी-मार्सियोनाइट प्रस्तावना, साथ ही साथ अधिस्थगन अंश, बकवास है। दोनों निर्विवाद चार गुना सुसमाचार, चर्च की परंपरा की बात करते हैं। हम मैथ्यू की उम्मीदवारी की पुष्टि करने के लिए अपनी पुस्तक अगेंस्ट हेरेसीज़ में इरेनियस को भी देख सकते हैं। 3.11.8 साइरपियन, उनके एपिस्टल्स 73:10 क्लेमेंट ऑफ़ अलेक्जेंड्रिया 3.13, और अन्य पैट्रिस्टिक स्रोत।

मुझे यकीन है कि आप इस बारे में काफी कुछ पढ़ चुके होंगे, और इस बार मैथ्यू को साहित्य के एक अंश के रूप में कैसे संकलित किया गया है, इस विषय से थोड़ा अधिक रोचक विषय पर चर्चा करेंगे। तो, अब हम इस व्याख्यान के अपने तीसरे मुख्य पहलू, साहित्यिक मामलों की ओर बढ़ते हैं, जो कि अशिक्षित प्रश्न का पहला पहलू है: मैथ्यू किस तरह की पुस्तक है? सुसमाचार क्या है? पुस्तकों के रूप में सुसमाचार की शैली से हमारा क्या तात्पर्य है, जिसमें इतिहास और धर्मशास्त्र दोनों हैं

यीशु के बारे में सुसमाचार की कहानियों की ऐतिहासिकता की पुष्टि करने की आवश्यकता से संबंधित क्षमाप्रार्थी चिंताओं के कारण, रूढ़िवादी इंजीलवादियों ने कई बार यह देखने में अनिच्छा दिखाई है कि सुसमाचार धार्मिक रूप से प्रेरित हैं। यह उदारवादी विद्वत्ता के जवाब में होता है, जो सुसमाचारों को यीशु के बारे में विश्वसनीय परंपराओं को प्रसारित करने के बजाय चर्च की जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार किए गए कल्पनाशील दस्तावेजों के रूप में देखता है। इस तरह की विद्वत्ता सुसमाचार की कहानियों को खोजती है जो वास्तव में, ऐतिहासिक यीशु के बजाय, 70 ई. के बाद चर्च द्वारा सामना की गई स्थितियों और विवादों को दर्शाती हैं। इस तरह की सोच का एक उदाहरण हमारी ग्रंथ सूची में एफ.डब्ल्यू. बैर द्वारा की गई टिप्पणी है। इंजीलवादियों ने सुसमाचार की ऐतिहासिक विश्वसनीयता के बचाव में क्रेग ब्लोमबर्ग के 1987a शीर्षक से काम करने जैसे लोगों का सही तरीके से जवाब दिया है, लेकिन ऐसा करने में कभी-कभी सुसमाचारों के धार्मिक महत्व को ग्रहण लग जाता है।

दूसरों ने कई बार गुमराह करने वाले युग-संबंधी विचारों से तर्क दिया है कि सुसमाचार हमें केवल इतिहास देते हैं, क्योंकि हम नए नियम के पत्रों से धर्मशास्त्र प्राप्त करते हैं, विशेष रूप से पॉल के पत्रों से। हालाँकि, यह इतिहास बनाम धर्मशास्त्र का द्वंद्व झूठा है; सुसमाचार बताते हैं कि वास्तव में क्या हुआ था, लेकिन ऐसा धार्मिक कारणों से किया जाता है। लूका के प्रस्तावना के अनुसार लूका ने मौखिक और लिखित परंपरा की विश्वसनीयता का पता लगाने के

लिए सावधानीपूर्वक ऐतिहासिक शोध किया, ताकि थियोफिलस को लूका के प्रस्तावना से सुसमाचार में विस्तार करते समय यीशु के बारे में विश्वसनीय सत्य सिखाया जा सके। ऐसा लगता है कि उनकी प्रक्रिया यीशु परंपराओं को प्रसारित करना था। उन्होंने अपने श्रोताओं की आध्यात्मिक ज़रूरतों को पूरा करने के उद्देश्य से इसे प्राप्त किया था।

सुसमाचारों में हमें यही मिलता है, चयनित परम्पराओं की धर्मवैज्ञानिक व्याख्याएं, जिनके बारे में लेखकों का मानना है कि वे वास्तविक ऐतिहासिक घटनाएं हैं, जो यीशु के जीवन और सेवकाई के दौरान घटित हुईं।

यह धारणा कि सुसमाचारों में धर्मशास्त्रीय रूप से व्याख्या की गई इतिहास शामिल है, विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। जब कोई प्रत्येक सुसमाचार के विशिष्ट महत्व को देखता है। यूहन्ना का सुसमाचार। यह अध्याय 20 की आयत 30 और 31 में स्पष्ट किया गया है, जहाँ सुसमाचार प्रचारक कहता है कि वह यीशु के बारे में बहुत सी बातें जानता था, जिसके बारे में आपने नहीं लिखा। लेकिन उसने कुछ खास बातों के बारे में लिखा, ताकि उसके श्रोता विश्वास कर सकें और जीवन पा सकें।

इसलिए हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि सुसमाचार लेखकों ने ऐतिहासिक डेटा का ढेर लगाकर पाठकों की बौद्धिक जिज्ञासा को संतुष्ट करने के लिए नहीं लिखा। बल्कि उन्होंने यीशु के जीवन से चुनिंदा प्रसंगों को उनकी ज़रूरतों के हिसाब से लाकर उन समुदायों को शिष्य बनाने के लिए लिखा। इस प्रकार सुसमाचार कथाएँ आज भी यीशु के विश्वसनीय शब्दों के धार्मिक, अस्तित्वगत निहितार्थों को दिखाकर शिक्षा देती हैं।

स्रोत आलोचना और समकालिक समस्या। सुसमाचारों का सरसरी तौर पर पढ़ने से भी पता चलता है। मौलिक समानता को समकालिक समस्या के रूप में जाना जाता है। पहले तीन सुसमाचार क्या हैं? कुछ मामलों में इतने समान और दूसरों में इतने अलग। सभी इंजीलवादी ऐसे मामलों में केवल पवित्र आत्मा के सुसमाचार के नेतृत्व के माध्यम से विश्वास करते हैं। ल्यूक के प्रस्तावना पर लेखक का चिंतन हमें भोले-भाले धर्मनिष्ठ उत्तरों से परे ले जाएगा। यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि ल्यूक पहले लिखे गए के बारे में जानते थे। इसमें उनके सुसमाचारों का 1:1 भी शामिल है, जो बदले में शुरुआती शिष्यों और प्रत्यक्षदर्शियों से प्रसारित रिपोर्टों पर आधारित थे, इस कारण से, समकालिक समस्या की यह संक्षिप्त चर्चा महत्वपूर्ण है।

संबंधों में एक समकालिक उत्पत्ति के सिद्धांतों को दो मुख्य समूहों में विभाजित किया जा सकता है: वे जो प्रत्येक सुसमाचार की साहित्यिक स्वतंत्रता पर जोर देते हैं और वे जो मानते हैं कि दूसरी ओर, सुसमाचारों के बीच कुछ साहित्यिक अंतरनिर्भरता है। जहाँ तक साहित्यिक स्वतंत्रता की बात है, कुछ विद्वान प्राचीन निकट पूर्व में पवित्र परंपरा के मौखिक प्रसारण के प्रचलन की ओर इशारा करते हैं, सुसमाचारों की घटना को साहित्यिक स्तर पर एक दूसरे से

उधार लिए बिना आसानी से उपलब्ध मौखिक परंपरा के उनके व्यक्तिगत संपादन द्वारा समझाया जा सकता है।

इस तरह का दृष्टिकोण कुछ हद तक सफलता के साथ समकालिकता के बीच अंतरों को समझा सकता है। लेकिन ऐसा लगता है कि यह चूक समकालिकता के समझौतों की एक संतोषजनक व्याख्या है, जिसमें कई बार विस्तारित अंशों के समान शब्द शामिल होते हैं।

साहित्यिक। ऐसा लगता है कि परस्पर निर्भरता ने दिन जीत लिया है और अधिकांश विद्वान। इस तथ्य पर कायम रहें कि मैथ्यू ने अपने सुसमाचार को लिखते समय मार्क का उपयोग किया था, और यह साहित्यिक परस्पर निर्भरता थी। इसे आधुनिक से प्राचीन की ओर उलट दिया गया क्योंकि, जैसा कि ऑगस्टीन ने किसी भी चर्च के पिताओं में माना था, उनका मानना था कि सुसमाचारों का विहित क्रम साहित्यिक निर्भरता के क्रम का प्रतिनिधित्व करता है। हाल ही में, मैथ्यू की प्राथमिकता के लिए पैट्रिस्टिक दृष्टिकोण को तथाकथित ग्रेसबैक परिकल्पना में कुछ हद तक संशोधित किया गया था, जिसने माना कि बाजार मैथ्यू और ल्यूक दोनों का उपयोग करता है।

जबकि कुछ लोग अभी भी मैथियन प्राथमिकता को मानते हैं, आज विद्वानों की यह आम सहमति मैथ्यू के साथ मार्केन प्राथमिकता का पक्ष लेती है। और ल्यूक की रचना, उनके सुसमाचार की एक, मार्क और एक अन्य काल्पनिक स्रोत, जिसे क्यू के रूप में जाना जाता है, की स्वतंत्रता जिसमें कथित तौर पर यीशु की बातों का संग्रह शामिल था। कभी-कभी, इस दृष्टिकोण को दो स्रोत सिद्धांत के रूप में जाना जाता है, लेकिन इसे मार्क के साथ चार स्रोत सिद्धांत में आगे विकसित किया गया है और आपको मैथ्यू के लिए एक अतिरिक्त काल्पनिक स्रोत एम और ल्यूक के लिए एल द्वारा पूरक किया जाता है।

जहाँ तक इस पाठ्यक्रम की स्थिति का सवाल है, हम मैथ्यू के लिए एक कथात्मक दृष्टिकोण पर जोर दे रहे हैं, न कि एक दस्तावेजी परिकल्पना दृष्टिकोण पर जैसा कि हम अब समझाएँगे।

कथात्मक आलोचना। सिनॉटिक समस्या को हल करने में निश्चितता के करीब पहुँचने की उपयोगिता, स्रोत की परमाणु प्रवृत्तियों के साथ मिलकर। आलोचनात्मक अध्ययनों ने कुछ लोगों को एक और दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित किया है, एक साहित्यिक पद्धति, जिसे आमतौर पर कथात्मक आलोचना के रूप में जाना जाता है। कथात्मक आलोचना प्रत्येक सुसमाचार को एक पूरे के रूप में देखती है और धर्मशास्त्र में, प्रत्येक सुसमाचार के भागों की तुलना इन तथाकथित काल्पनिक स्रोतों के बजाय पूरे से करके अर्थ के बारे में निष्कर्ष निकालती है।

पॉवेल ने अपनी पुस्तक नैरेटिव क्रिटिसिज्म में लिखा है कि इस तरह के सुसमाचारों को पढ़ने के लिए "पाठ में कहीं गई हर बात को जानना जरूरी है। जैसे ही पाठक को पता चल जाता है, और पाठ में बताई गई हर बात को भूल जाना चाहिए, जो पाठक को पता नहीं है," यह उनकी पुस्तक के पृष्ठ 20 पर है। यह दृष्टिकोण उचित लगता है, कि सुसमाचारों को ईसाई समुदायों के उत्थान के लिए लिखे गए धर्मशास्त्रीय रूप से व्याख्या किए गए इतिहास के रूप में देखा जाता है। कोई सोच सकता है कि सुसमाचार इन समुदायों के भीतर समग्र रूप से कार्य करते हैं, न कि अन्य स्रोतों के रूप में पिछले सुसमाचारों पर फैलने वाले ओवरले के रूप में। आधुनिक विद्वान परंपराओं के इतिहास को उजागर करने में काफी व्यस्त रहे हैं, जो वे सिनॉटिक्स में पाते हैं, लेकिन प्राचीन ईसाई समुदायों के लिए ऐसा दृष्टिकोण असंभव लगता है।

चर्च के संदर्भ में सुसमाचारों के अध्ययन के लिए स्रोत आलोचना की तुलना में कथात्मक आलोचना अधिक उपयुक्त प्रतीत होती है, क्योंकि सुसमाचारों की शैली धर्मशास्त्रीय रूप से व्याख्या किए गए इतिहास के रूप में है और सुसमाचार का पवित्र शास्त्र के रूप में विहित कार्य है। इसलिए, यह टिप्पणी एक कथात्मक आलोचनात्मक अध्ययन होगी। उन सभी स्रोत आलोचनात्मक मामलों को कभी-कभी नोट किया जाएगा

सामान्य रूप से साहित्यिक आलोचना और विशेष रूप से आलोचना में एक कमजोरी यह है कि साहित्यिक दस्तावेजों के ऐतिहासिक संदर्भ को आमतौर पर अनदेखा कर दिया जाता है, क्योंकि वे विषय से हटकर होते हैं। लेकिन जब पवित्र शास्त्र का अध्ययन इंजील संदर्भ में किया जाता है तो साहित्यिक स्रोतों द्वारा व्याख्या की गई ऐतिहासिक घटनाओं को एक साथ रखा जाना चाहिए।

अब, अंत में, मैथ्यू के सुसमाचार की साहित्यिक संरचना। मैथ्यू की संरचना को समझना, कथात्मक आलोचनात्मक दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण है, जो पूरे सुसमाचार को तैयार करने में सभी भागों को स्पष्ट करने का प्रयास करता है।

हालांकि गुंड्री और हैरिंगटन जैसे कुछ विद्वान मैथ्यू की रूपरेखा बनाने में निराश हैं, लेकिन निम्नलिखित दृष्टिकोण आम तौर पर पाए जाते हैं। कृपया अपने नोट्स में अगला पृष्ठ देखें और जो मैं कह रहा हूँ उसकी तुलना पृष्ठ चार पर सूचीबद्ध तीन दृष्टिकोणों से करें। मार्केन रूपरेखा में, मैथ्यू का अक्सर कालानुक्रमिक और भौगोलिक रेखाओं के साथ विश्लेषण किया गया है, जो मार्क का विश्लेषण करने में अच्छी तरह से काम करता है, ऐसा दृष्टिकोण जो आम तौर पर परिणाम देता है और विश्लेषण, जो मार्क में मैथ्यू के साथ शुरू होता है, गलील में यीशु की सार्वजनिक सेवकाई, उसे यरूशलेम की यात्रा पर ले जाना, उसके अंतिम दिनों के साथ। उसका दुख, विश्वासघात, गिरफ्तारी, सूली पर चढ़ना, पुनरुत्थान, और शिष्यों को नियुक्त करना।

इन मामलों में, हमारे पास यीशु के प्रति एक प्रकार का ऐतिहासिक जीवनीपरक दृष्टिकोण है, लेकिन यह मैथ्यूज के वैकल्पिक कथात्मक और प्रवचन खंडों की विशिष्ट पद्धति को बिल्कुल भी शामिल नहीं करता है।

मैथ्यू की संरचना के लिए दूसरा दृष्टिकोण 4:17 और 16:21 में वाक्यांश पर आधारित है, "तब से यीशु ने शुरुआत की।" यह जैक किंग्सबरी और उनके लेखन, साथ ही मैथ्यू की संरचना पर डेविड बाउर का दृष्टिकोण है। उन्होंने इस वाक्यांश को बुलाया है, जो 4:17 में दो महत्वपूर्ण मोड़ पर आता है, जॉन बैपटिस्ट की गिरफ्तारी के ठीक बाद। यीशु का सार्वजनिक मंत्रालय "उसके बाद से, यीशु ने प्रचार करना शुरू किया" शब्दों के साथ शुरू हुआ (16:21, पीटर के कबूलनामे के ठीक बाद कि यीशु मसीहा हैं, मैथ्यू कहते हैं कि उस बिंदु से, यीशु ने अपना चेहरा यरूशलेम की ओर कर दिया और अपने शिष्यों को बताना शुरू कर दिया कि वह वहाँ मारा जाएगा। इसलिए, यह स्पष्ट है कि 16:21 में ये दो छंद 4:17 भले ही महत्वपूर्ण हैं, लेकिन सवाल एक साहित्यिक उपकरण की तुलना में एक जीवनी संबंधी मार्कर से अधिक प्रतीत होता है। दूसरे शब्दों में, ये यीशु की जीवनी में उनके जीवन और मंत्रालय के चरणों में महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं। लेकिन क्या ये सभी मैथ्यू की संरचना के लिए महत्वपूर्ण हैं? मुझे नहीं लगता। मुझे लगता है कि यह पिछले, कालानुक्रमिक भौगोलिक दृष्टिकोण से अलग नहीं है जैसा कि मार्क के सुसमाचार में जोर दिया गया है

तो, यह हमें तीसरे स्थान पर ले जाता है, जो कि पूरे व्याख्यान में लिया गया दृष्टिकोण है, हमारे व्याख्यानों में यह नहीं कहा गया था, मैथ्यू ने लंबे समय से नोट किया है, प्रमुख कथाओं के अंत में, "यीशु के समाप्त होने के बाद" वाक्यांश द्वारा कथा, प्रवचन सामग्री, संकेत का अनूठा मेल।

इस मैथियन संरचनात्मक पैटर्न को स्वीकार करना आवश्यक नहीं है बेकन को स्वीकार करते हुए, आप पाएंगे कि मैथ्यू ने यीशु की पांच पुस्तकों को स्थापित किया है, जो पेंटाटेच में मूसा की पांच पुस्तकों का जवाब देते हैं।

इस अनूठे रूप पर आधारित रूपरेखा आपके पूरक सामग्रियों में, पृष्ठ चार पर, और इसके अधिक विस्तृत संस्करण में पाई जाती है। यह पूरक सामग्रियों में बाद में भी पाया जाता है, जहाँ आप इसे पृष्ठ चार पर संक्षेप में देख सकते हैं। ऐसा लगता है कि यह हमें स्पष्ट रूप से दिखाता है कि मैथ्यू हमें यह बताने की कोशिश कर रहा था, न कि केवल यीशु ने क्या किया, बल्कि मुख्य रूप से उसने क्या कहा। और यह मैथ्यू की अनूठी विशेषता है, जो इसे मार्क से अलग करती है।

मैथ्यू, यदि आप इसकी तुलना मार्क से करते हैं, तो किसी भी दिए गए पेरिस्कोप या एपिसोड के बारे में आप पाएंगे कि मैथ्यू ने घटना, संक्षिप्त मार्क के वर्णनात्मक विवरण, लेकिन यीशु की शिक्षा का विस्तार किया है। यीशु की शिक्षा, फिर मैथ्यू के सुसमाचार में अद्वितीय प्रवचनों

में दिखाई देती है, जो निश्चित रूप से अध्याय 5 से 7 में होते हैं, पृष्ठ 4, खंड 2 बी पर रूपरेखा पर ध्यान दें मिशन अनुभाग 3 पर प्रवचन। बी अध्याय 10, दृष्टांतों पर प्रवचन, 4 बी अध्याय 13, राज्य में रिश्तों पर प्रवचन, अध्याय 18, यह रूपरेखा में खंड 5 बी है। और अंत में, प्रवचन, जिसे ओलिवेट प्रवचन या यीशु का युगांतिक प्रवचन कहा जाता है। अध्याय 26:1 में इस युगांतिक प्रवचन के बाद मैथ्यू कहता है कि यीशु के समाप्त होने के बाद, ये सभी शब्द। यह महत्वपूर्ण हो सकता है, और वह हमारा ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित कर रहा है कि यह यीशु की अंतिम सार्वजनिक शिक्षा है। मत्ती के सुसमाचार में, और "ये सभी शब्द" संभवतः पिछले चार प्रवचनों, साथ ही अध्याय 24 और 25 में पांचवें और अंतिम प्रवचन को याद दिलाते हैं।

तो, कृपया बताएं, पृष्ठ चार पर "यीशु के समाप्त होने के बाद" वाक्यांश के आधार पर पृष्ठ के निचले आधे भाग की रूपरेखा को देखें, उसे देखें और उस पर ध्यान दें क्योंकि ऐसा लगता है कि यह इस बात का एक संकेतक है कि हमें मत्ती के सुसमाचार को किस प्रकार से एक साथ फिट करने की आवश्यकता है।

यह पहले व्याख्यान का अंत है। हम आपसे व्याख्यान 1 बी में मिलेंगे।